International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति एवं महत्व

विवेक

प्रस्तावना

भारत में शिक्षा के प्रति चिंतन प्राचीन काल से चलता आ रहा है। बौद्ध शिक्षा नैतिक जीवन का दर्शन है। गौतम बुद्ध ने तत्व मीमांसा के विवेचन में समय लगाना अनुपयोगी समझा क्योंकि उनके अनुसार इससे मनुष्य के जीवन को बेहतर करने में सहायता नहीं मिलती है। बुद्ध का मानना था कि जिन विषयों के समाधान के लिए पर्याप्त प्रमाण न हो, उनके समाधान की चेष्टा बेकार है। बुद्ध ने पूर्व प्रचलित अनेक दार्शनिक मतों को युक्तिहीन तथा निराधार प्रतिपादित किया और उन्होंने अप्रत्यक्ष तथा संदिग्ध विषयों के बारे में तर्क का परित्याग किया, क्योंकि उससे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं होता है।

बौद्ध शिक्षा के उद्देश्य

तत्कालीन समय में वैदिक शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थी, अतः बौद्ध शिक्षा पर भी इसका प्रभाव पड़ा। गौतम बुद्ध ने भी मानव जीवन का लक्ष्य निर्वाण या मोक्ष प्राप्ति को माना है। बौद्ध धर्म के अनुसार मानव जीवन में दुख है और शिक्षा इन दुखों को दूर करने का मार्ग प्रशस्त करती है। बौद्ध धर्म का आधार चार आर्य सत्य है, यथा - जीवन दुःखों से परिपूर्ण है, दुःखों का कारण है, दुःखों का अंत संभव है, दुःखों के अंत के उपाय है। वेदांत के समान बौद्ध धर्म में भी दुःखों का कारण मानव अज्ञानता को माना गया है तथा यदि इस अज्ञान को दूर किया जा सके तो दुःखों का अंत हो सकता है। इस कारण बौद्ध शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को अज्ञान से मुक्त करना है, जो कि दुखों का कारण है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गौतम बुद्ध के अनुसार दुख का कारण तृष्णा है। यह तृष्णा भौतिक इच्छाओं के कारण है तथा इस तृष्णा के कारण ही मनुष्य को जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति नहीं मिलती है। मानव को जन्म और मृत्यु से मुक्ति के लिए निर्वाण अपरिहार्य है। केवल प्रार्थना करने से, वेद मंत्रोच्चार से, मन की तृष्णा का अंत नहीं हो सकता। तृष्णा के निरोध के लिए गौतम बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग प्रदर्शित किया है, जिससे तृष्णा का अंत किया जा सके।

अष्टांगिक मार्ग

1. **सम्यक् दृष्टि** - बौद्ध दर्शन के अनुसार अविद्या के कारण इस जगत और आत्मा के संबंध में मिथ्या दृष्टि उत्पन्न होती है। अविद्या के कारण मानव क्षणिक, दुखदायी, अनित्य और सतत् परिवर्तनशील अनात्म वस्तुओं को सुखदायी, नित्य, स्थाई और आत्मरूप मान लेते है। ज्ञान प्राप्ति के फलस्वरुप शिक्षित मनुष्य वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को पहचान लेता है, इसे सम्यक् दृष्टि कहते है। गौतम बुद्ध के अनुसार शिक्षा का प्रथम कार्य छात्रों को सम्यक् दृष्टि प्रदान करना है।
2. **सम्यक् संकल्प** - बौद्ध शिक्षा के अनुसार मात्र ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही दुखों का अंत नहीं होता जब तक कि उस ज्ञान को जीवन में उतारा न जाए दूसरे लोगों के प्रति हिंसा का त्याग, सामाजिक विषयों से विरक्ति भाव और द्वेष के त्याग से ही जीवन को दुखों से मुक्त किया जा सकता है।
3. **सम्यक् वचन** - बौद्ध शिक्षा के अनुसार जीवन में दुखों से मुक्ति पाने के लिए तीसरा महत्वपूर्ण चरण संयमित वाणी का प्रयोग करने से है। एक शिक्षित व्यक्ति दूसरों की निंदा नहीं करता। झूठ और अप्रिय वाणी का प्रयोग नहीं करता। इस प्रकार संयमित वचन का व्यवहार सम्यक् वचन कहलाता है।
4. **सम्यक् कर्म** - बौद्ध शिक्षा के अनुसार दुखों से मुक्ति पाने का चौथा चरण संयमित कर्म से है। सम्यक् संकल्प और सम्यक् वचन दोनों सम्यक् कर्म के पालन में सहायक होते है। सत्य, अस्तेय, अहिंसा इंद्रिय संयम ये सभी सम्यक् कर्म माने जाते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

5. **सम्यक् आजीविका** - बौद्ध शिक्षा के अनुसार दुखों से मुक्ति पाने का पांचवा चरण संयमित आजीविका द्वारा अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करने से है। आजीविका के लिए उचित मार्ग का अनुसरण करना तथा अनुचित उपायों का परित्याग करने से मनुष्य अपने जीवन के दुखों से मुक्ति पा सकता है।
6. **सम्यक् व्यायाम** - सम्यक् व्यायाम के अंतर्गत व्यक्ति को उपरोक्त मार्गों का निरंतर अभ्यास करते रहना चाहिए जिससे वह सन्मार्ग से विचलित न हो सके और अपनी तृष्णा का अंत कर सके।
7. **सम्यक् स्मृति** - इसके अंतर्गत मिथ्या धारणाओं का परित्याग और वास्तविक धारणाओं का स्मरण इस प्रकार तृष्णा का अंत करने में सहायता प्राप्त होती है।
8. **सम्यक् समाधि** - इसके अंतर्गत उपरोक्त सात गुण जिस व्यक्ति के जीवन और चरित्र के अंग बन जाते है, वह व्यक्ति सम्यक् समाधि में प्रवेश होने की योग्यता प्राप्त कर लेता है। सम्यक् समाधि निर्वाण प्राप्त करने का प्रथम चरण भी है।

बौद्ध शिक्षा में छात्र संकल्पना

बौद्ध शिक्षा के मध्यमा प्रतिपदा सिद्धांत के अनुसार छात्र का कोई अतीत है और उसका भविष्य भी है। विद्यार्थी की वर्तमान स्थिति व उसके पूर्व जन्म के कर्म और बाल्यावस्था के संस्कारों पर भी निर्भर है। वह जो कुछ है अकस्मात् नहीं बना है किंतु उसके अतीत के संस्कार उसके साथ जुड़े हुए है। छात्र का भविष्य उसके वर्तमान संकल्पना और कर्म पर निर्भर है। अध्यापन कार्य में जीवन का यह दृष्टिकोण बड़ा सहायक होता है। अध्यापन से पहले, छात्र की यथा स्थिति का पता लगाना हर अध्यापक के लिए आवश्यक है। बौद्ध सिद्धांत एक ओर सभी छात्रों में मौजूद एकता की हमें स्मरण दिलाता है, दूसरी ओर उस में अवस्थित भिन्नता का कारण भी प्रस्तुत करता है। बच्चों का वर्तमान स्वरूप अतीत के संस्कारों का परिणाम होता है और क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी का अतीत एक समान नहीं होता है, उनमें विभिन्नता का होना भी स्वाभाविक ही है। सभी विद्यार्थियों की अध्ययन क्षमताएं एक सी नहीं होती है। अतः सभी छात्रों के स्तर के अनुरूप

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन क्रिया का संयोजन करना अध्यापक के लिए आवश्यक है। सभी बच्चों का शरीर है, मन है, चेतना है और यह सभी वह साधन है, जिनसे वह ज्ञान ग्रहण करते है। वह साधन सामग्री है, जिससे अध्यापक छात्रों को अच्छा व्यक्ति और अच्छा नागरिक बना सकते है।

बौद्ध शिक्षा के अनुसार भावी विकास की क्षमताएं वर्तमान में मौजूद होती है। बच्चे के वर्तमान अस्तित्व में जो उपस्थित नहीं है, उससे भिन्न उसे नहीं बनाया जा सकता। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होता। भावी कार्य के बीज वर्तमान कारण में उपस्थित रहते है। इस 'कारण-कार्य नियम' को बौद्ध शिक्षा में प्रतीत्यसमुत्पाद का नियम भी कहा जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकालना सही नहीं होगा कि बौद्ध शिक्षा के अनुसार विद्यार्थी की नियति पूर्व निर्धारित है तथा वह स्वेच्छा से कुछ नहीं कर सकता।

बौद्ध शिक्षा में कारण कार्य संबंध के साथ यह भी प्रतिपादित किया गया है कि उसका भविष्य है और उसका भविष्य सम्यक् संकल्प पर भी निर्भर करता है। बौद्ध शिक्षा में विश्वास रखने वाला अध्यापक विद्यार्थियों के भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित कर सकता है और छात्रों की क्षमताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम की व्यवस्था भी कर सकता है, सही प्रकार का संकल्प छात्रों की सहायता कर सकता है। उसे अपने भावी जीवन की दिशा निर्धारित करने में मदद कर सकता है। बौद्ध शिक्षा जातिगत भेदों को नहीं मानता और प्रत्येक मनुष्य के लिए शिक्षा सुलभ करना चाहता है। शिक्षा प्राप्त करना सभी मनुष्यों का अधिकार है। सब दुखों से मुक्त होना चाहते है और बिना ज्ञान के दुखों से मुक्ति नहीं पाया जा सकता। बौद्धों के अनुसार निर्वाण प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य है तथा निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करने वाली शिक्षा सबको उपलब्ध होनी चाहिए।

बौद्ध शिक्षा में अध्यापक संकल्पना

बौद्ध शिक्षा के अनुसार वही व्यक्ति शिक्षक हो सकता है जिसने चार आर्य सत्य को समझ लिया हो और जिसका स्वयं का जीवन बुद्ध द्वारा प्रदर्शित अष्टांग मार्ग के अनुरूप व्यतीत होता हो। बौद्ध दर्शन में दो प्रकार के शिक्षकों को प्रस्तुत किया गया है। पहला, आचार्य छात्र अनुशासन का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधिकारी होता है और दूसरा, उपाध्यापक अध्ययन-अध्यापन का दायित्व संभालता है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में वर्तमान संस्थागत शिक्षा का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, जिसमें एक आचार्य के अधीनस्थ अनेक उपाध्यापक और सभी उपाध्यापक के पास छात्रों का एक छोटा सा समूह अध्ययन करता है।

शिक्षकों के पारस्परिक संबंधों को स्नेह पूर्ण बनाए रखने के लिए आचार्य कुछ नियम निर्धारित करते है, जो तत्कालीन समय में शास्त्र सम्मत होते थे। इस प्रकार उपाध्यापक का कार्य अध्ययन-अध्यापन करने से संबंधित है। आचार्य का काम न केवल विद्यार्थियों में अनुशासन बनाए रखना है, बल्कि उसका दायित्व शिक्षकों के बीच अनुशासन कायम रखने का भी होता है।

बौद्ध शिक्षा में पाठ्यक्रम

बौद्धों के अनुसार यह विश्व परिवर्तनशील है और मानव भी परिवर्तनशील है, विश्व में कुछ भी स्थाई नहीं है। यहां तक की आत्मा भी स्थाई नहीं है, वह भी परिवर्तनशील है। इस संदर्भ में वेदांत के समान शाश्वत ज्ञान और परिवर्तनीय ज्ञान जैसा पाठ्यक्रमीय विभाजन करना संभव नहीं है। बौद्ध दर्शन का आग्रह दुखवाद और दुख से मुक्त होने के उपाय तक सीमित रहा। यदि केवल इन विचारों तक पाठ्यक्रम को सीमित किया जाए तो बौद्ध शिक्षा का पाठ्यक्रम सीमित होता, जिसमें चार आर्य सत्य का संपूर्ण परिपाक, जिसके अंतर्गत संसार की व्यवस्था, विश्व में मानव का स्थान, विश्व के कार्य व्यापार, विश्व की परिवर्तनीयता और क्षणिकता, विश्व का आभास, कार्य कारण संबंध आदि गहन अध्ययन सम्मिलित है। बौद्ध साहित्य का अध्ययन, सम्यक् रूप से आजीविका उपार्जन करने की कला, बुद्ध और अन्य समकालीन विद्वानों की जीवन चरित्रों का अध्ययन तथा कालांतर में बौद्ध शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम का विस्तार इसमें दिखाई देता है।

बौद्ध विहारों और मठों में पांच प्रकार की व्यवस्थाओं द्वारा अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जाता था - पहला, शब्द विद्या - इसमें व्युत्पत्ति, शब्द निर्माण, और व्याकरण ज्ञान का समावेश होता था। दूसरा, शिल्पासन विद्या - जिसमें विभिन्न प्रकार के उद्योग और कलाएं आती थी ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तीसरा, चिकित्सा विद्या - इसके अंतर्गत शरीर विज्ञान, औषध विज्ञान आदि का अध्ययन किया जाता था। चौथा, हेतु विद्या- इसमें तर्कशास्त्र का अध्ययन किया जाता था। पांचवां, अध्यात्म विद्या - जिसमें बौद्ध दर्शन तथा अन्य समकालीन दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता था। इसके अतिरिक्त बौद्ध विहार और मठ में खेल कूद और व्यायाम का प्रावधान भी किया था क्योंकि बुद्ध के अनुसार स्वस्थ विचारों के लिए स्वस्थ शरीर को आवश्यक माना गया है।

बौद्ध शिक्षण विधि

बौद्ध विहार में शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है -

1. **शिक्षक द्वारा व्याख्यान**- इसके अंतर्गत व्याख्यान एक साथ अनेक छात्रों को दिया जाता है परंतु देने वाला यानी शिक्षक अपने विषय में निपुण होना चाहिए। इस विधि में शिक्षा की प्रक्रिया एकांगी होती है। शिक्षक विषय का पूर्ण परिपाक प्रस्तुत करता है ,किंतु विद्यार्थी अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार उसे ग्रहण करता है।
2. **शिक्षक द्वारा छोटे समूह को शिक्षा**- इस विधि में शिक्षक छात्रों के छोटे समूह को शिक्षा प्रदान करता है। अध्ययन सामग्री का पहले स्वयं शिक्षक पाठ करता है और विद्यार्थी उसका श्रवण करते है। उसके बाद शिक्षक का अनुकरण करते हुए विद्यार्थी स्वयं पाठ करते है। शिक्षक अशुद्धि संशोधन के साथ उन्हें बार-बार पाठ करने का अभ्यास करवाते है।
3. **व्याख्या** - शिक्षक ज्ञान की व्याख्या करते है। विद्यार्थी बीच-बीच में अपनी शंका प्रकट करते है और शिक्षक उन शंकाओं को दूर करने का प्रयास करता है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि विद्यार्थी पूरी तरह से शिक्षा ग्रहण न कर ले।
4. **चर्चा** - इसके अंतर्गत बौद्ध ज्ञान और जटिल दार्शनिक विषयों पर विद्यार्थी परस्पर चर्चा करते है और अपनी समझ को बढ़ाते है।

सामूहिक शिक्षण विधि के अलावा कतिपय व्यक्तिगत अध्ययन विधियों का विवेचन मिलता है, जैसे- बौद्ध सूत्रों को बार-बार दोहराकर आत्मसात करना, तथ्यों को याद करना और उनका संचय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करना, संबंधित सामग्री पर बार-बार मनन करना और मनन के पश्चात आत्मसात हुई सामग्री को धारण करना।

जैसा कि उपरोक्त विवेचन में कहा गया है कि ज्ञान के फलस्वरुप दुखों से मुक्ति मिल जाती है और आनंद की प्राप्ति होती है। आनंद प्राप्ति इस अवस्था का विवरण सम्यक् समाधि के अंतर्गत किया गया है। सम्यक् समाधि की भी चार अवस्थाएं होती है -

पहले चरण में, शांत चित्त से आर्य सत्य पर विमर्श और तर्क-वितर्क किया जाता है। शुद्ध विचार और विरक्ति के कारण साधक शांति और आनंद का अनुभव करता है, जिसे शुद्धता व वैचारिक शांति मिलती है।

दूसरे चरण में, सन्देह दूर हो जाते है और चार आर्य सत्यों के प्रति श्रद्धा बढ़ती है, तर्क-वितर्क अनावश्यक हो जाते है और चित्त-स्थिरता और चिंतन की स्थिति स्थित होती है। इस चरण में शांति और ज्ञान साथ-साथ सम्मिलित होते है।

तीसरे चरण में, शांति तथा आनंद से मन को हटाकर एक उपेक्षा भाव लाने का प्रयास किया जाता है। इस प्रयास में चित्त की साम्यावस्था तथा उसके साथ-साथ दैहिक सुख का भी भाव बना रहता है।

चौथे चरण में, चित्त की साम्यावस्था, दैहिक सुख और ध्यान के आनंद से भी साधक विरक्त हो जाता है, जिसमें चित्त वृत्ति का निरोध हो जाता है। इस चरण में पूर्ण शांति और निरोध की प्राप्ति होती है। यह पूर्ण प्रज्ञा की अवस्था है।

बौद्ध कालीन विश्वविद्यालय

बौद्ध शिक्षा केंद्रों के रूप में तक्षशिला, कश्मीर, काशी तथा कालांतर में नालंदा, वलवी, विक्रमशिला प्रसिद्ध हुए। तक्षशिला में मुख्य रूप से उच्च शिक्षा का कार्य किया जाता है और यह ज्ञान और विद्या का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. **नालंदा और वलभी विश्वविद्यालय** - युआन-च्वांग चीनी यात्री एक महायानी बौद्ध भिक्षु था। भारत भ्रमण पर उसने यहां विभिन्न विश्वविद्यालयों में बौद्ध और ब्राह्मण दर्शनों का अध्ययन किया। उसने विशेष रूप से नालंदा और वलभी विश्वविद्यालय का उल्लेख किया है। पूर्व में नालंदा और दूसरा पश्चिम में वलभी का उल्लेख उसने किया है। वलभी हीनयानी विश्वविद्यालय था। अतः युआन-च्वांग का ध्यान नहीं गया, परंतु नालंदा का विस्तृत वर्णन उसने किया है, जिसे उसके शिष्य और जीवनी लेखक हवुई-ली ने संपूर्ण रूप दिया है।

   नालंदा में युआन-च्वांग ने नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख आचार्य शीलभद्र से पांच वर्षों तक योग दर्शन का अध्ययन किया। उसके अनुसार यह एक बहुत बड़ा विश्वविद्यालय था, वहां अध्ययन की कई शालाएं थी, व्याख्यान के लिए प्रकोष्ठ थे, ग्रंथालय थे, व्याख्यानों के लिए प्रवेश तथा उपस्थिति के नियम थे, छात्रों से संबंधित नियम थे, शिक्षण व्यवस्था के विधि निषेधात्मक नियम थे, नियमों की अवहेलना का पूरा दंड विधान था, वह संस्था कितनी बड़ी थी। युआन-च्वांग के अनुसार वहां डेढ़ हजार अध्यापक और दस हज़ार छात्र थे। इत्सिंग के समय में यह संख्या घटकर तीन हज़ार हो गई थी।

   युआन-च्वांग कि जो जीवनी हवुई-ली ने लिखी है, उसमें पृष्ठ 112 पर नालंदा में पढ़ाए जाने वाले विषयों का वर्णन दिया गया है - "नालंदा विश्वविद्यालय के भिक्षु और अन्य निवासियों की संख्या दस हज़ार थी और सभी महायान की शिक्षा प्राप्त करते थे। 18 पंथो के ग्रंथ पढ़े जाते थे, जिनमें वेद-वेदांग आदि भी शामिल थे। हेतु विद्या, शब्द विद्या, चिकित्सा विद्या, अथर्ववेद या मंत्र विद्या, सांख्य आदि सम्मिलित थी, इसके साथ ही वे फुटकर ग्रंथों का भी सूक्ष्म अध्ययन करते थे। एक हज़ार व्यक्ति वहां ऐसे है जो बीस सूत्र ग्रंथ और शास्त्र समझ सकते है, पांच सौ ऐसे अध्यापक है जो ऐसे 30 ग्रंथ समझ सकते है। अकेले शीलभद्र ऐसे है जिन्होंने सारे ग्रंथ पूरी तरह से पढ़े है और वह सब ग्रंथों को समझा सकते है।"

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'बौद्ध धर्म के वृतांत' के 34वें अध्याय में इत्सिंग के अनुसार भारतीय विश्वविद्यालयों में जो शिक्षण पद्धति प्रचलित थी, उसके बारे में जानकारी देते है। छात्रों के अध्ययन का एक अनिवार्य अंग संस्कृत व्याकरण था। इत्सिंग लिखते है कि "पुराने अनुवादक (संस्कृत से चीनी में) संस्कृत भाषा के नियम हमें नहीं बताते... अब मुझे पूरा विश्वास है कि संस्कृत व्याकरण के संपूर्ण अध्ययन से अब इस अनुवाद में जो भी कठिनाइयां आएगी, वह दूर हो जाएगी।" बाद में वह संस्कृत व्याकरण का व्यवस्थित रूप से कैसे अध्ययन होता है उसका वर्णन देते है। यशोमित्र की टीका से स्पष्ट है कि व्याकरण ग्रंथ पढ़े जाते थे, उनमें मुख्य थे - पाणिनी-सूत्र, धातूपाठ, अष्टधातु, काशिका-वृत्ति, चूर्णि, वाक्यपदीय आदि । इत्सिंग के अनुसार तरुण छात्र हेतुविद्या और अभिधर्म कोश सीखते है। 'न्यायद्वार तर्कशास्त्र' सीखने से उनकी अनुमान शक्ति विकसित होती है, तथा जातक माला पढ़ने से उनकी कल्पना और विचार शक्ति बढ़ती है। भिक्षु न केवल सब विनय सीखते है, बल्कि समस्त सूत्रों और शास्त्रों का भी अनुसंधान करते है। इत्सिंग यह भी लिखते है कि "भारत में दो परंपराएं ऐसी है जिनके द्वारा मनुष्य ऊंची बौद्धिक शक्ति प्राप्त कर सकता है, एक बारंबार कंठस्थ करने से उसकी बुद्धि बढ़ती है और दूसरा वर्णमाला के अक्षरों से विचार निश्चित हो जाते है। इस प्रकार से दस दिन के भीतर विद्वान को ऐसा लगने लगता है कि उसके विचार फव्वारे की तरह फूट रहे है और एक बार सुनी हुई चीज बताने की जरूरत न होते हुए, बराबर याद रह जाती है। यह सिर्फ सुनी-सुनाई गप नहीं है, परंतु मुझे स्वयं ऐसे लोग मिले है।"

युआन-च्वांग और इत्सिंग दोनों ने ही एक और प्रमुख महाविहार का वर्णन किया है। वह पश्चिमी भारत का वलभी विश्वविद्यालय था। इत्सिंग लिखता है कि इस विश्वविद्यालय में छात्र दो-तीन वर्ष तक अपना अध्ययन पूरा करने के लिए रहते थे। उसके अनुसार तत्कालीन समय में वलवी हीनयानियों की सबसे बड़ी संस्था थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** - तारानाथ के 'भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास' के वर्णन से और अन्य ऐतिहासिक हस्तलिखित रचनाओं में जो उल्लेख है, उससे यह जानकारी प्राप्त होती है कि विक्रमशिला इन विश्वविद्यालयों में सबसे बड़ा और प्रसिद्ध था। गंगा के दाहिने किनारे पर विक्रमशिला एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित था। यह स्थान अभी निश्चित रूप से नहीं पाया गया है। संभवतः जल के वर्षों के कटाव से वह बह गया हो, किंतु अपने सबसे चरम काल में इसे बंगाल के बौद्ध पाल राजाओं का सरंक्षण प्राप्त था। प्रत्येक द्वार पर विश्वविद्यालय का एक विद्वान रक्षक होता था, जो द्वार-पंडित कहलाता था। इसमें पंडित की अंतिम उपाधि दी जाती थी।

   तिब्बती अभिलेखों के अनुसार दीपांकर श्रीज्ञान, जिनका तिब्बती नाम अतिश है, के नाम से संबंध होने के कारण विक्रमशिला की कीर्ति थी। ओदंतपुरी में अपना अध्ययन पूरा करके यह विद्वान आचार्य 1034-38 ई. में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रमुख बने। बाद में तिब्बत के राजा की नियंत्रण पर वे तिब्बत में गए और बौद्ध धर्म के सुधार का आंदोलन उन्होंने शुरू किया। तब बौद्ध धर्म तिब्बत का राजधर्म था।
3. **ओदंतपुरी विश्वविद्यालय**- इस विश्वविद्यालय को पाल राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। पाल राजाओं ने बहुत उदारता पूर्वक इसे दान दिया, माना जाता है कि तिब्बत में जो पहला बौद्ध विद्यालय बना वह इसी विश्वविद्यालय के आदर्श पर था।
4. **जगद्दल विश्वविद्यालय**- बंगाल के पाल राजा बौद्ध धर्म के संरक्षक थे। राजा रामपाल (1084-1030 ई.) ने एक नई राजधानी गंगा और इसकी एक सहायक नदी करतोया के संगम पर बनाई। उसका नाम रामावती रखा। यहां उसने जगद्दल नामक बौद्ध विश्वविद्यालय स्थापित किया, किंतु मुश्किल से डेढ़ सदी बाद मुस्लिम आक्रमण में नष्ट हो गया परंतु इस छोटे से समय में इसने कई विद्वान दिए, जिनके नाम आज केवल ग्रंथों की तिथि और लेखों से पता चलता है। यह उल्लेख संस्कृत और तिब्बती दोनों भाषाओं में है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बौद्ध शिक्षा के मूल्य

बौद्ध शिक्षा में 'मध्यमा प्रतिपदा' सिद्धांत परिलक्षित होता है। बौद्ध शिक्षा के अंतर्गत जीवन में किसी एक मूल्य पर आग्रह नहीं दिखाई देता। यह न तो जैन के समान पूर्ण विरक्ति का आग्रह करता है न ही चार्वाक दर्शन के समान केवल सांसारिक सुख को महत्वपूर्ण मानता है बल्कि इसमें जीवन में संतुलन को विशेष स्थान दिया गया है।

- **संयमित मध्यम मार्ग**- बौद्ध शिक्षा के पाठ्यक्रम का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि बौद्ध दर्शन में एक ओर शिक्षा पर आग्रह है तो दूसरी ओर व्यवहारिक जीवन की शिक्षा को भी आवश्यक माना गया है। यदि एक ओर ध्यान, चिंतन- मनन पर आग्रह है, तो दूसरी ओर आजीविका की शिक्षा पर बल पर भी बल दिया गया है।
- **नैतिक मूल्य**- बौद्धों द्वारा मानव के व्यक्तित्व का जो विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, उसमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि मानव के विकास में नैतिक कार्य कारण सिद्धांत क्रियाशील रहता है। बौद्ध शिक्षा के अनुसार हमारा संकल्प हमें निश्चित रूप से नैतिक बनाता है तथा प्रतिपादित द्वादश निदान के अनुसार समस्त विश्व हमारे संकल्प का परिणाम है। अतः यदि हम संकल्प करें तो निश्चित रूप से नैतिक भी बन सकते है।
- **शारीरिक मूल्य-** बौद्ध शिक्षा के अनुसार इच्छाओं का त्याग और इंद्रियों का दमन नैतिक जीवन के लिए आवश्यक है, किंतु शारीरिक स्वास्थ्य की उपेक्षा करना उचित नहीं है। बुद्ध के अनुसार शरीर को स्वस्थ रखना हमारा कर्तव्य है, अन्यथा विवेक का दीपक प्रज्वलित नहीं किया जा सकता है।
- **आर्थिक मूल्य**- बौद्ध शिक्षा में एक ओर सांसारिक सुखों की लालसा का त्याग करने का उपदेश दिया गया है, तो दूसरी ओर उचित माध्यम से आजीविका कमाने का भी उपदेश दिया गया है। बौद्ध विहारो में यद्यपि कोई भिक्षु संपत्ति नहीं रख सकता था, परंतु संघ को संपत्ति रखने का अधिकार था। इस प्रकार आर्थिक मूल्य की उपेक्षा न करके बुद्ध ने भी मध्यम मार्ग अपनाने का उपदेश दिया।

- **सामाजिक मूल्य-** बौद्ध शिक्षा प्रणाली में छोटे समूहों द्वारा शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई। इन समूहों में शांति और समन्वय बनाए रखने के लिए अनुशासन के नियम बनाए गए तथा इस प्रकार सामाजिक नियम और अनुदेशों के पालन पर विशेष बल दिया गया। बौद्ध शिक्षा के अनुसार मानव कोई भी कार्य करें, किन्तु वह नैतिक जीवन का पालन अवश्य करें। मनुष्य अपने आप को सामाजिक हित के लिए समर्पित करके शांति, सुख, आनंद प्राप्त कर सकता है जबकि इच्छा या आकांक्षाओं आदि स्वार्थी वृत्तियाँ केवल दुख का कारण बनती है।

निष्कर्ष

बौद्ध साहित्य की आलोचना समीक्षा की जाए तो ज्ञात होता है कि तत्कालीन शिक्षा पद्धति पर धर्म का व्यापक प्रभाव था। जिसमे व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया जाता था। उसका दृष्टिकोण व्यवहारिकता की अपेक्षा आदर्शवादी अधिक था। मानव अपने सुख और दुख के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने अज्ञान से स्वयं अपने लिए दुख और अशांति को पैदा करता है। अतः बुद्ध द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण और चिंतन करने से उसे वास्तविक शांति और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति हो सकती है। इस तरह से हम देखते है कि बुद्ध के धर्म का मार्ग सिर्फ वर्तमान को ही नहीं बल्कि हमारे भविष्य को भी प्रकाशित करता है। आज भारत में ही नहीं विश्व के कई देशों में बौद्ध धर्म का अनुसरण करने वाले अनुयायी मौजूद है जिसने भी इस धर्म को अपने जीवन में अपनाया, आध्यात्मिक चिंतन किया है, वह आज करुणा, मैत्री, सुख, शांति आदि का जीवन व्यतीत कर रहा है।

संदर्भ सूची

- उपाध्याय, आचार्य बलदेव (2014). बौद्ध दर्शन मीमांसा, वाराणसी: चौखंबा विद्याभवन प्रकाशन.

- अग्निहोत्री, रविंद्र (2010). आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
- पांडे, डॉ गोविंद चंद्र (1990). बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
- बापट, पी. वी. (2010). बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, नई दिल्लीः सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार.
- के., डॉ. लक्ष्मीलाल ओड़ (2019). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.